करौंदा का (*प्रोटेशिया आल्बोगुट्टेटा*) प्रमुख कीट

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 158–159

करौंदा का (*प्रोटेशिया आल्बोगुट्टेटा*) प्रमुख कीट एवं उसका जैविक नियंत्रण

रवि कुमार रजक[1], श्रेतांक सिंह[2] एवं ओम नारायण[3]
[1] शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग
[2]शोध छात्र, पादप रोग विज्ञान विभाग
[3]शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय कुमारगंज, अयोध्या उतर प्रदेश, भारत।
Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय

करौंदा का पौधा कांटेदार झाड़ीनूमा होने के कारण इसे खेतों के चारों ओर बाड़ के रूप में लगाया जाता है। और इसके फल खट्टे एवं स्वादिष्ट होते है। जिससे जैली, मुरब्बा, चटनी तथा कैन्डी आदि तैयार की जाती है। और यह एक बहुत ही अच्छा पौधा होता है। एवं इसमें सूखे को सहने की अत्याधिक क्षमता होती है। इसको सूखी, बंजर, रेतीली, पथरीली भूमि में भी लगाया जा सकता है। और पड़ती भूमि में पौध रोपड़ के लिए एक उपयोगी पौधा है। इसकी दो प्रजातियां है। पहली भारतीय प्रजाति और दूसरी अफ्रीकन प्रजाति है। भारतीय प्रजाति को देशी करौंदा भी कहते है। इसके फल देखने में आकर्षक, छोटे एवं गुलाबी रंग के होते है। और इसकी उपज 6–7 किलो प्रति झाड़ी होती है। दुसरी वाली अफ्रीकन प्रजाति के फल आकार में बड़े एवं गहरे लाल रंग के होते है। यह स्वाद में मीठे होते है। और इनमें विटामिन सी की मात्रा कम होती है। इसकी उपज 3–4 किलोग्राम प्रति झाड़ी होती है। और गृह वाटिका के लिए यह बहुत अच्छी प्रजाति है। करौंदे के पौधे बीज द्वारा ही तैयार किये जाते है। इसके नये पौधे तैयार करने के लिए अगस्त–सितम्बर माह में पूर्ण रूप से पके हुये फलों से बीज निकालकर तुरन्त ही क्यारियों में अथवा पॉलीथीन की थैलियों में बो देना चाहिए। इसके बाद देखा गया है कि इसमें कुछ कीट बहुत ही ज्यादा नुकसान पहुंचाते है।

प्रोटेशिया आल्बोगुट्टेटा एवं उसका नियंत्रण–

यह एक गुबरैल भृंग है, जो सेटेनिने (*कोलियोप्टेराः स्कैराबीडे*) परिवार का है। यह दिनचर होते है। और प्रमुख बागवानी फसलों के फलो एवं फूलों को अपना आहार बनाते है। इस प्रकार से किसान को बहुत बड़ा आर्थिक नुकसान होता है। यह प्रोटेशिया जाति एशिया की है, जिसमें कुछ प्रमुख कीट है। प्रोटेशिया एक्युमिनेटा, प्रोटेशिया फ्युस्का, प्रोटेशिया ओरिएन्टालिस आदि जो आम और पपीते के फूलों को नष्ट करते है। इनमें से प्रोटेशिया फ्युस्का और प्रोटेशिया ओरिएन्टालिस फ्लोरिडा आक्रमण के रूप में पाए जाते है।

अप्रैल–जून 2013 के दौरान भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंग्लूरू के परीक्षण बागों में किए गए सर्वेक्षण में करोदा को फलों या प्रोटेशिया आल्बोगुट्टेटा का गंभीर प्रकोप देखा गया है। बड़ी संक्ष्या में ये भृंग एकत्रित होकर करौंदा के पके फलों को खाते पाए गये है। जिससे कि 30 प्रतिशत तक का नुकसान हुआ है। इस जाति की पहचान डॉ. वी. वी. राममूर्ती ने की तथा वाउचर नमूने को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के कीट विज्ञान विभाग के वर्गीकरण संग्रह में जमा किया गया है।

यह कीट दिन के समय पूरी तरह से सक्रिय रहते है। जो पेड़ के चारों ओर ऊँची आवाज लगाकर घूमते है। और फलों को संक्रमित

करते रहते है। एवं उन्ही संक्रमित फलों पर संभोग में लगे भृंगो का दृश्य सामान्य होता है। ये भृंग एक ही साथ फल खाने और प्रणय लीला में व्यस्त रहते है। वयस्क भृंग स्पाट पृष्ठ वाले, बड़े खाल वाले, कालायुक्त हरे रंग वाले तथा पूरे शरीर पर सफेद धब्बेवाले होते है। आंखे ऊपर उठी हुई होती है। जबड़े फैले नही होते है। ये ऊपर दिखते है। इसका लेब्रम पटलिक एंटीना से छिपा होता है। इसमें अच्छे क्रीम रंग के रोम उदर एवं मुँह के भागों पर इधर–उधर फैले होते है। और यह भृंग पके हुए फलों पर आकार्षित होते है। एवं सिर पर लगे तुरही से फलों को काटते है। और अपनी टोंटी फलों के अन्दर डालकर गूदा खाते है। इस प्रकार खाने से फल पूरी तरह खराब होते है। और द्वितीयक फफूँद का संक्रमण हो जाता है।

कीट नियंत्रण के उपाय–

- बगीचे में साफ–सफाई रखें
- कीट से ग्रसित शाखाओं को काटकर जला दें।
- इस कीट की रोकथाम के लिए नीमास्त्र का प्रयोग करें। और इस नीमास्त्र को बनाने के लिए 5 किलोग्राम नीम की पत्तियां लें या फिर 5 किलोग्राम नीम के फल लें, और इनको कुचल लें, और फिर इसमें 5 लीटर देशी गाय का गौमूत्र मिलायें, एवं इसी में 1 किलोग्राम देशी गाय का गोबर मिलायें और फिर इसी में 100 लीटर पानी मिलाकर एक प्लास्टिक के ड्रम में भर दें, और इसे 48 से 72 घण्टे के लिये बोरा से ढककर रख दें और सुबह या शाम के समय लकड़ी की सहायता से घुमाते रहें और 72 घण्टे पूरे होने के बाद कपड़े की सहायता से छान लें। और फिर 500–700 ग्राम प्रति 15 लीटर के हिसाब से किसी भी फसल पर उपयोग करें। जिस फसल में भी रस चूषक कीटों का प्रकोप हो गया है या फिर छोटी इल्लियां हैं इन सभी के लिए यह बहुत ही असर दार होगा।
- इस कीट की रोकथाम के लिए 350 ग्राम तम्बाकू के पत्ते एवं 300 ग्राम कनेर के फल और 50 ग्राम लाल मिर्च पाउडर 2 लीटर पानी में अच्छे से उबाल कर ठण्डा कर लें और इस मिश्रण को 30 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- तीन घोल जैव–कीटनाशी का प्रयोग करें और यह इस प्रकार बनता है। जैसेः सामग्री और उसकी विधि–3 किलोग्राम कुचली एवं पीसी हुए नीम की पत्तियां और 1 किलोग्राम निंबोली पाउडर को 10 लीटर गौ–मूत्र एक ताम्र घट (15 लीटर क्षमता का) में मिलाकर लें और जब तक इसकी मात्रा आधी न रह जावे। और इसके बाद इस घोल को 10 दिनों तक सड़ने दें। और 500 ग्राम कुचली एवं पिसी हुई हरी मिर्च को 1 लीटर पानी में रातभर भिगो कर रखें। और 250 ग्राम पिसा हुआ लहसुन को 1 लीटर पानी में मिलाकर रातभर के लिए रख दें। एवं इसका उपयोग इस तरीके से है। कि कीट नियंत्रण के लिए तीनों मिश्रण को 200 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ में छिड़काव करें।
- इस कीट की रोकथाम के लिए अग्नि अस्त्र का प्रयोग करें। जो इस प्रकार से बनाया जाता है। इसमे 5 किलोग्राम नीम की पत्ते लें, और 20 लीटर देशी गाय का गौमूत्र लें, और फिर तम्बाकू के पत्ते या फिर डंठल या पिसा हुआ तम्बाकू पाउडर 500 ग्राम लें, और 500 ग्राम तीखी मिर्च की चटनी लें, और फिर 500 ग्राम लहसुन की चटनी लें, इन सभी चीजो को धीमी आंच पर एक उबाल आने तक उबालें। और फिर इस मिश्रण को 48 घण्टे तक छाया में रखें और इसके बाद कपड़े से छानकर 6 से 8 लीटर घोल 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ की फसल पर छिढ़काव करें। लेकिन इस बने हुए अग्नि अस्त्र को 3 माह के अन्दर ही प्रयोग कर लें।